एरोपोनिक तकनीक से उगाए गए आलू की गुणवत्ता मिट्टी में उगाए गए आलू से बेहतर रहती है

एरोपोनिक टेक्निक से आलू उगाने में मिट्टी का उपयोग नहीं होता, हवा में खेती की जाती है, जिससे आलू की ज्यादा उपज होती है। साथ ही आलू की गुणवत्ता मिट्टी में उगाए गए आलू से बेहतर रहती है। इस तकनीक से पैदावार 10 गुना ज्यादा हो सकती है। एरोपोनिक तकनीक में बड़े-बड़े बक्सों में आलू के पौधे लटकाए जाते हैं।

एरोपोनिक तकनीक से उगाएं आलू

कम लागत में होगा तगड़ा मुनाफा

एरोपोनिक टेक्निक से आलू उगाने में मिट्टी का उपयोग नहीं होता, हवा में खेती की जाती है, जिससे आलू की ज्यादा उपज होती है। साथ ही आलू की गुणवत्ता मिट्टी में उगाए गए आलू से बेहतर रहती है। इस तकनीक से पैदावार 10 गुना ज्यादा हो सकती है। एरोपोनिक तकनीक में बड़े-बड़े बक्सों में आलू के पौधे लटकाए जाते हैं। इस तकनीक से प्राप्त बीज बीमारी रहित होते हैं। बक्से में लटके हुए आलू की जड़ों के माध्यम से पौधे को पोषक तत्व दिए जाते हैं।

एरोपोनिक तकनीक का फायदा यह है कि इससे ज्यादा आलू उगाए जा सकते हैं। तकनीक के तहत टिश्यू कल्चर और बायोटेक्नोलॉजी की सहायता से पौधे तैयार किए जाते हैं। एक पौधे में करीब 40 आलू प्राप्त होते हैं। इस तकनीक से खेती के लिए सबसे पहले टिश्यू कल्चर से तैयार किए गए पौधों को 20 दिन तक कोकोपिट में रखा जाता है। इसके बाद कोकोपिट से पौधे निकालकर एरोपोनिक में लगाए जाते हैं। एरोपोनिक में पौधों को अलग-अलग पोषक तत्व उपलब्ध कराए जाते है। बॉक्स में हर दिन आलू की क्वालिटी और अच्छे साइज के लिए पौधों का पीएच मान चेक किया जाता है।

वैज्ञानिक के मुताबिक, किसानों को इस तकनीक का काफी फायदा होगा। कम लागत में ही आलू की ज्यादा पैदावार हासिल की जा सकती है। इस तकनीक में लटकती हुई जड़ों के द्वारा उन्हें पोषण दिए जाते हैं। जिसके बाद उसमें मिट्टी और ज़मीन की ज़रूरत नहीं होती। इसमें में पोषक तत्वों को धुंध के रूप में जड़ों में छिड़का जाता है। पौधे का ऊपरी भाग खुली हवा और प्रकाश में रहता है। एरोपोनिक तकनीक से हर 3 महीने में आलू की उपज हासिल की जा सकती है। मिट्टी से संपर्क नहीं रहने के कारण आलू का पौधा पूरी तरह से स्वस्थ रहता है। साथ ही इस पर कीटों या रोगों का हमला भी नहीं होता है।

घर की छत पर भी ये तकनीक आएगी काम

एरोपोनिक तकनीक में आलू की लटकती हुई जड़ों के द्वारा उन्हें पोषण दिया जाता है। इस विधि से खेती करने के लिए किसान को मिट्टी और ज़मीन की ज़रूरत नहीं पड़ती है। ऐसे में किसान घर की छत पर भी एरोपोनिक तकनीक से खेती कर सकते हैं।

एरोपोनिक विधि से आलू की खेती

भारत एक कृषि प्रधान देश है। 75 फीसदी से अधिक आबादी की आजीविका कृषि पर निर्भर है। पहले यहां के किसान हल-बैल से खेती करते थे। लेकिन अब समय के साथ-साथ खेती किसानी भी तकनीकी आधारित हो गई है, क्योंकि कृषि को उन्नत बनाने के लिए रोज नए-नए आविष्कार किए जा रहे हैं। इसके चलते भारतीय किसान अब तकनीक के मामले में अमेरिका और यूरोप को टक्कर देने लगे हैं। पहले जहां पूरे देश में आलू की खेती पारंपरिक विधि से की जाती थी, अब एरोपोनिक विधि से इसे हवा में ही उगाया जा रहा है। इससे किसानों की कमाई भी बढ़ गई है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, एरोपोनिक फार्मिंग देश में बहुत ही तेजी से फैल रही है। कहा जाता है कि इसमे पारंपरिक खेती के मुकाबले 10 गुना अधिक आलू की पैदावार होती है। यानी किसानों की कमाई भी 10 गुना अधिक होगी। खास बात यह है कि एरोपोनिक तकनीक की मदद से किसान अपने घर की छत पर भी आलू की खेती कर सकते हैं। ऐसे एरोपोनिक फार्मिंग विधि को हरियाणा के करनाल जिले में स्थित आलू प्रौद्योगिकी केंद्र ने तैयार किया है। इस तकनीक में नर्सरी में आलू के पौधों को तैयार किया जाता है। इसके बाद पौधों की रोपाई एक एरोपोनिक यूनिट में की जाती है।

क्या है एरोपोनिक फार्मिंग

एरोपोनिक तकनीक में आलू की लटकती हुई जड़ों के द्वारा उन्हें पोषण दिया जाता है। इस विधि से खेती करने के लिए किसान को मिट्टी और ज़मीन की ज़रूरत नहीं पड़ती है। ऐसे में किसान घर की छत पर भी एरोपोनिक तकनीक से खेती कर सकते हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि एरोपोनिक तकनीक से खेती करना किसानों के लिए काफी फायदेमंद साबित हो रहा है। इससे किसान कम लागत और कम जगह में आलू की ज्यादा पैदावार मिल सकती है। ज्यादा पैदावार होने की स्थिति में किसानों की आमदनी में भी इजाफा होगा।

पूरे देश में किसान कर रहे खेती

एरोपोनिक फार्मिंग खेती करने का आधुनिक और वैज्ञानिक तरीका है। इसके तहत खेती करने के लिए सबसे पहले आलू के उन्नत किस्म के पौधों की नर्सरी तैयारी की जाती है। इसके बाद नर्सरी में तैयार पौधों को गार्डनिंग यूनिट में पहुंचाया जाता है। इसके बाद पौधों की जड़ों को बावस्टीन में डुबो दिया जाता है। इससे फंगस का खतरा नहीं रहता है। फिर ऊंचा बेड बनाकर आलू के पौधों की रोपाई की जाती है। जब पौधे 10 से 15 दिन के हो जाते हैं तो एरोपोनिक यूनिट में पौधों की रोपाई करके कम समय में अधिक आलू का उत्पादन मिलता है। इस तकनीक की मदद से अब पूरे देश में किसान आलू उगा रहे हैं।

इस नई तकनीक से बदल रहा है आलू की खेती का स्वरूप

आलू की खेती में एक नई क्रांति का समय आया है, जहां एरोपोनिक तकनीक का प्रयोग करके बिना ज़मीन और मिट्टी के ही इसे उगाया जा रहा है। हरियाणा के करनाल जिले में स्थित आलू प्रौद्योगिकी केंद्र ने इस तकनीक को डेवलप किया है और सरकार ने इसे आलू की खेती के लिए मंजूरी दी है। मध्य प्रदेश बागवानी विभाग ने भी इसका लाइसेंस प्रदान किया है, इससे आलू की खेती में वृद्धि हो सकती है। हालाँकि, इस तकनीक का चलन इज़राइल में काफी पहले से होता रहा है।

एरोपोनिक तकनीक में आलू के पौधों को ज़मीन की बजाय हवा में उगाया जाता है। इस तकनीक में पौधों को लटकती हुई जड़ों के माध्यम से पोषण पहुंचाया जाता है। इसके लिए पोषक तत्वों को जड़ों पर स्प्रे किया जाता है। इसके बाद पौधों को खुली हवा और रोशनी में रखा जाता है, जिससे पौधों को पूरा पोषण मिलता है।

आलू प्रौद्योगिकी केंद्र के अनुसार, इस तकनीक का इस्तेमाल करके जमीन की कमी को पूरा किया जा सकता है। इससे उपज कई गुना तक बढ़ सकती है। इसके परिणाम स्वरूप किसान आलू की ज्यादा फसल उगा सकते हैं और कम लागत में ज्यादा मुनाफा कमा सकते हैं। चूंकि एरोपोनिक तकनीक में लटकती हुई जड़ों के माध्यम से पौधों को पोषक तत्व दिये जाते हैं, जिससे स्वस्थ और अच्छे बीजों के विकास में भी मदद मिलती है।

इस तकनीक का इस्तेमाल करने पर आलू की पहली फसल 70 से 80 दिनों में उगने लगती है और इससे बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है। एरोपोनिक तकनीक का इस्तेमाल करने से आलू की फसल में मिट्टी के कारण होने वाले रोगों की संभावना कम रहती है, जिससे किसानों को नुकसान कम होता है और मुनाफा बढ़ता है। इस तरह, एरोपोनिक तकनीक ने आलू की खेती में एक नया विकल्प जोड़ दिया है, जिससे किसानों की आमदनी में बढ़ोतरी हो रही है।